शोध परिधि
SHODH PARIDHI

साहित्य, कला संस्कृति, मानविकी एवं समाज विज्ञान की
द्विभाषिक षट्मासिक राष्ट्रीय शोध पत्रिका

Volume : 1 Issue : 1/2014 ISSN : 2349-9575

मुख्य संरक्षक
श्रीयुत गोपाल दास 'नीरज'

प्रधान सम्पादक
डॉ. जीत सिंह

सम्पादक
डॉ. मंजू चौहान

सम्पादक
डॉ. किशोर कुमार
डॉ. हरिन्द्र कुमार

सहसम्पादक
डॉ. सत्यन्त कुमार
डॉ. कनक कुमार

प्रबन्ध सम्पादक
डॉ. अर्चना सिंह
डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

शोध परिधि - प्रेरणा साहित्य समिति हापुड़ (रजि.)-245101
एवं 80 'जी' से पंजीकृत (उ.प्र.) भारत द्वारा प्रकाशित

शोध परिधि ISSN-2349-9575

साहित्य,कला,संस्कृति,मानविकी एवं समाज विज्ञान की
द्विभाषिक षट्मासिक राष्ट्रीय शोध पत्रिका

भारतीय आचारमीमांसा का वैशिष्ट्य-विमर्श

–नीलम शर्मा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग
कु0 मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, बादलपुर गौतमबुद्धनगर।

शोध सारांश

भारत वर्ष में प्राचीनतम वैदिककाल से अधुनातन आचारविषयक चिन्तन की समृद्ध परम्परा है। चूँकि आचार का सम्बन्ध सम्पूर्ण जीवमात्र से है, अतः उसमें वस्तुनिष्ठता होनी चाहिये, किन्तु भौगोलिक और कालिक विभिन्नता के कारण विविध देशो के नैतिक चिन्तन में भिन्नता परिलक्षित होती है। उदाहरणः भारतीय और पाश्चात्य आचारमीमांसा में मानवजाति के लिये सर्वोत्तम लक्ष्य का निर्देश है, किन्तु सर्वत्र इस लक्ष्य कां स्वरूप और प्राप्ति के मार्ग भिन्न–भिन्न हैं।

यद्यपि भारतीय नैतिक सम्प्रदायों में कतिपय सामान्य विशेषताएँ है, जो उन्हें पाश्चात्य नैतिक चिन्तन से भिन्नता प्रदान करती है, तथापि यहाँ यह मानकर चलना भ्रामक होगा कि भारतीय नीतिशास्त्र पाश्चात्य नीतिशास्त्र से एकदम भिन्न है, लेकिन यह सोचना भी उतना ही भ्रामक होगा कि दोनों ही पूर्णतः समान है।[1] इसलिये भारतीय आचारमीमांसा के वैशिष्ट्य के स्पष्टीकरण हेतु पाश्चात्य आचारमीमांसा से उसका भेदज्ञान अपरिहार्य है। अतः पाश्चात्य से भिन्न भारतीय आचारमीमांसा का वैशिष्ट्य इस प्रकार है।

1. प्राचीनता :–भारतीय आचारमीमांसा विश्व में प्राचीनतमा है। सर्वाधिक प्राचीन वेदों में इसका उल्लेख स्पष्टतया प्राप्त है। ऐतिहासिक दृष्टि से पश्चिम में मिस्र और यूनान की तथा पूर्व में भारत और चीन की संस्कृति सर्वप्राचीन है।[2] चूँकि पश्चिमी विचारक सामान्यतः प्रत्येक ज्ञान विज्ञान का प्रारम्भ यूनानी संस्कृति से ही मानते हैं, इसलिये वे आचार सम्बन्धी दार्शनिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन भी सर्वप्रथम यूनान में ही स्वीकार करते हैं। किन्तु इसे आंशिक रूप से ही सत्य माना जा सकता है। स्वयं अमेरिकी विचारक हॉपकिन्स ने इस पाश्चात्य धारणा का खण्डन करते हुए भारतीय नीति को प्राचीनतम माना है उनके अनुसार ईसाई युग के पूर्व भारत ने सत्य उदारता हृदय की दयालुता, आत्मा की पवित्रता, क्षमा तथा दया के आदर्श दैनिक जीवन के सिद्धान्तों के रूप में सिखायें जाते थे।[3] अतः भारत में नैतिक चिन्तन अत्यन्त प्राचीनकाल से किया जाता रहा है।

2. व्यावहारिकता :– भारतीय आचारमीमांसा व्यवहार प्रधान है। यहाँ दार्शनिक चिन्ता का मूल बौद्धिक कौतूहल की निवृत्ति मात्र में नहीं, वरन् जीवन की